कृतज्ञता, कृतज्ञता, और अधिक कृतज्ञता

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित परिचय

संयुक्त राज्य अमरीका में 'थैन्क्स्गिविंग' यानी कृतज्ञता दिवस तब से मनाया जाता रहा है जब से इस देश का अस्तित्व है—बल्कि इससे भी अधिक समय से यह पर्व मनाया जाता रहा है। सोलहवीं शताब्दी के दौरान यह पहली बार मनाया गया था और सन् १८६३ में इसे राजकीय तौर पर एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में निर्धारित किया गया, एक ऐसा उत्सव जो हर वर्ष मनाया जाएगा। यह वह समय है जब लोग एकत्रित होते हैं और एक-साथ मिलकर अपने जीवन में मौजूद प्रचुरता के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

बाबा मुक्तानन्द और गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने व्यापक तौर पर अमरीका में यात्राएँ की हैं व दैनिक रूप से और विशेषकर 'थैन्क्स्गिविंग' जैसे पर्वों पर सत्संग किए हैं। इसी कारण, सिद्धयोग पथ पर हम इस देश की इस परम्परा का सम्मान करते हैं। जैसा कि श्रीगुरुमाई ने कई बार कहा है—यह त्योहार चाहे किसी भी परम्परा का हो, यह सबके लिए एक महान अवसर है, भगवान के बारे में सोचने का, भगवत्प्रेम की अनुभूति करने का और कृतज्ञता अर्पित करने का।

सिद्धयोग पथ पर, हमें कृतज्ञ होने के लिए कारण ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं होती; श्रीगुरु की कृपा से जब एक बार हमारी अन्तर्निहित शक्ति जाग्रत हो जाती है तो हम अपने हृदय के उस भाग के सम्पर्क में आ जाते हैं जहाँ कृतज्ञता सदैव उमड़ती रहती है। और फिर हम पाते हैं कि हमारे चारों ओर तरह-तरह के, अनेकानेक कारण हैं जिनके लिए हम कृतज्ञ हो सकते हैं। हम क्षितिज पर उगते सूरज की गरमाहट के लिए कृतज्ञ होते हैं, हम बहती हुई नदी की कलकल ध्वनि के लिए कृतज्ञता महसूस करते हैं। हम अपने किसी मित्र की स्नेहभरी दृष्टि के लिए कृतज्ञ होते हैं, या किसी का प्रोत्साहन देने वाला एक शब्द भी हमें कृतज्ञता से भर देता है। मैं ऐसा समझती हूँ कि कृतज्ञता का अनुभव करते हुए हम उस सच्चाई और जादू के बारे में ऐसा कुछ जान रहे होते हैं जो इस सृष्टि से होकर प्रवाहित होता है। हमें उस दिव्यता की झलक मिल रही होती है जो इस विश्व का अन्तर्जात स्वभाव है।

'थैन्क्स्गिविंग' के सम्मान में, हमें यह सौभाग्य प्राप्त होगा कि हम उन छवियों को देखेंगे, उनका आनन्द लेंगे और उनसे घिर जाएँगे जो इस पृथ्वी के सौन्दर्य व पावनता को अभिव्यक्त करती हैं, जो इस पृथ्वी की प्रचुरता का उत्सव मनाती हैं, जो पूजाभाव को प्रकट करती हैं और जिनके द्वारा हमें दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। जल्द ही आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर एक वीडिओ देख पाएँगे जो इस पर्व का सम्मान करता है और मुझे लगता है कि आप देखेंगे कि यह वीडिओ कृतज्ञता-भाव को बड़ी

मनोरमता से जगाता है। इस वीडिओ में शक्तिपुंज आरकाइव्स् विभाग से प्राप्त, बाबा मुक्तानन्द की वे दुर्लभ तस्वीरें हैं जो १९७५ की उनकी यात्रा के दौरान ओक्लहोमा की कायओवा जनजाति के सदस्यों के साथ ली गई थीं।

इतना ही नहीं, इस वर्ष—२०२३ में—'थैन्क्स्गिविंग' उसी दिन है जिस दिन भारतीय पर्व, प्रबोधिनी कार्तिक एकादशी है; ये दोनों पर्व २३ नवम्बर को हैं। अतः इस वीडिओ में वे छवियाँ भी हैं जो एकादशी के इस पर्व का सम्मान करती हैं।

प्रबोधिनी कार्तिक एकादशी वह पर्व है जिसके प्रति मुझे लम्बे समय से आकर्षण रहा है। यह भगवान श्रीविष्णु को समर्पित पर्व है और ऐसा कहा जाता है कि यह उस दिन का सम्मान करता है जब भगवान श्रीविष्णु चार माह की अपनी निद्रा से जागते हैं। मुझे यह कल्पना करना अच्छा लगता है कि भगवान विश्राम कर रहे हैं, विशेषतः उस समय के दौरान जब भारत में वर्षा ऋतु का समय होता है और जो अन्तर्मुख होने व पुनर्जीवन के भाव को सहज ही जगाता है। इसी प्रकार, मुझे यह कल्पना करना अच्छा लगता है कि भगवान उस समय जागते हैं जब वर्षा थम जाती है और सूरज लौट आता है, और जब गन्ने जैसी फसल की कटाई शुरू होती है।

मेरा परिवार भारत के महाराष्ट्र राज्य से है, और मैं एकादशी पर किए जाने वाले व्रत-अनुष्ठानों के बारे में सुनते हुए बड़ी हुई हूँ; एकादशी यानी वे दिन जब, मान्यता के अनुसार, भगवान श्रीविष्णु शयन करते हैं और फिर जागते हैं। विशेष रूप से, मैंने सुना है कि किस प्रकार लोग एकादशी के पूर्व कुछ दिनों या सप्ताहों के दौरान महाराष्ट्र के पण्ढरपुर नगर की तीर्थयात्रा करते हैं। इनमें से सबसे बड़ी तीर्थयात्रा होती है आषाढ़ माह के दौरान [जो जून या जुलाई माह के दौरान आता है], और इस तीर्थयात्रा का समापन एकादशी के दिन होता है जब यह विश्रान्ति-काल यानी देवशयन आरम्भ होता है। कार्तिक माह [जो अक्टूबर व नवम्बर माह के दौरान आता है] में होने वाली तीर्थयात्रा भगवान के जागने के सम्मान में की जाती है। यद्यपि आषाढ़ माह की एकादशी की तुलना में कार्तिक माह की एकादशी अधिक भव्यता से नहीं मनाई जाती, फिर भी हर वर्ष यह हज़ारों तीर्थयात्रियों को आकृष्ट करती है।

मेरे अपने दादा जी ने पैंतीस वर्षों तक, लगभग हर वर्ष पण्ढरपुर की तीर्थयात्रा की। बचपन में, मैं बड़े चाव से उनसे कहानियाँ सुनती कि किस प्रकार वे और अन्य वारकरी यानी तीर्थयात्री भगवान की स्तुति में अभंग गाते-गाते, कीर्तन करते-करते, दो सौ मील की वह यात्रा पैदल ही किया करते। उनमें से कुछ तीर्थयात्री तो इस तीर्थयात्रा पर नंगे-पैर जाते! उनमें से कोई एक व्यक्ति चटकीला भगवा ध्वज

लिए होता जो कि वारकरीगण का प्रतीक है। अन्य वारकरीगण वाद्ययन्त्रों का वादन करते हुए चलते—जैसे, मँजीरे या फिर एकतारा जिसे चलते हुए आसानी से बजाया जा सकता है। मेरे दादा जी तम्बूरी लेकर चलते, जो कि तम्बूरे का ही एक छोटा स्वरूप है।

एकादशी के लिए पण्ढरपुर पहुँचने पर सभी वारकरी पहले पावन चन्द्रभागा नदी में स्नान करते। तत्पश्चात् वे भगवान विठोबा [या भगवान श्रीविठ्ठल] के दर्शन व पूजा करने मन्दिर जाते। भगवान विठोबा, भगवान श्रीविष्णु का वह रूप है जो पण्ढरपुर के मन्दिर में प्रतिष्ठापित है।

जो दीर्घकाल से सिद्धयोगी रहे हैं, उन अनेक लोगों से मैंने यह भी सुना है कि जब श्रीगुरुमाई व बाबा जी गुरुदेव सिद्धपीठ में होते तो वारकरी यह सुनिश्चित करते कि वे पण्ढरपुर जाते समय या वहाँ से लौटते समय आश्रम आकर गुरुमाई जी व बाबा जी के दर्शन करें और उनसे प्रसाद ग्रहण करें; और भगवान नित्यानन्द मन्दिर जाकर दर्शन करें। आश्रम पधारते हुए, उनकी उल्लासमय व जयघोष करती पालकी की ध्वनियों से हरेक आश्रमवासी को पता चल जाता कि वारकरीगण का आगमन हो रहा है।

गुरुमाई जी व बाबा जी ने स्वयं, भारत की अपनी शिक्षण-यात्राओं के दौरान पण्ढरपुर की यात्राएँ की हैं। शक्तिपुंज आरकाइव्स् द्वारा मैंने यह जाना कि सन् १९८८ में गुरुमाई जी ने महाराष्ट्र के तीर्थों की अपनी आठ दिवसीय यात्रा के दौरान भगवान विठोबा का अभिषेक किया था, उन्हें रेशमी वस्त्रों से सुशोभित कर उनकी आरती की थी। इस वीडिओ में वे छवियाँ हैं जब गुरुमाई जी व बाबा जी ने यहाँ की यात्रा की थी; साथ ही इस वीडिओ में वारकरीगण व पण्ढरपुर मन्दिर में प्रतिष्ठापित भागवान विठोबा की मूर्ति के चित्र भी हैं।

वारकरीगण की कहानियाँ और सिद्धयोग पथ पर हमने किस प्रकार इस परम्परा का सम्मान किया है, इस विषय में कहानियाँ सुनते हुए मैं बड़ी हुई हूँ और ये कहानियाँ मेरे हृदय के अत्यन्त निकट हैं। अतः आप कल्पना कर सकते हैं कि इस वीडिओ को लेकर मेरे मन में कितनी उत्सुकता होगी। इससे मुझे उस समय का भी स्मरण हो आया जब मुझे स्वयं अपने तरीक़े से यह तीर्थयात्रा करने का सौभाग्य मिला, और वह भी अपने गुरुगृह में। वर्ष २००० के ग्रीष्मकाल के दौरान, जब मैं आठ वर्ष की थी, मैंने *Golden Tales—Lives of the Saints* में भाग लिया था। यह भारत के सन्त-कवियों के जीवन पर आधारित नाटिकाओं की एक शृंखला थी जो श्री मुक्तानन्द आश्रम के बच्चों ने प्रस्तुत की थी। मैंने सन्त-कवि नामदेव महाराज के जीवन पर आधारित नाटिका में भाग लिया था और मुझे एक विशेष भूमिका का सौभाग्य मिला। किस भूमिका का? एक वारकरी की भूमिका का! वह तो मानो परिपूर्णता

का क्षण था! वारकरी वाले परम्परागत श्वेत वस्त्र पहनकर, मैं अन्य बाल-वारकरीगण के साथ नृत्य कर रही थी और हम श्रीगुरुमाई के सम्मुख नृत्य करते हुए पूरे सत्संग-हॉल में घूम रहे थे।

उस शोभायात्रा में हुए अहसास की याद मुझे अब तक है—गुरुमाई जी के लिए कीर्तन करते हुए नृत्य करना! हाँ ठीक है, मैं एक नाटिका में भाग ले रही थी, परन्तु इससे मेरे अन्दर जो भक्ति उमड़ रही थी, जो शुद्ध आनन्द बह रहा था, वह सब स्पष्टतः बिलकुल सच्चा, बिलकुल वास्तविक था। मुझे यक़ीन है कि इस वीडिओ को देखकर हम सभी को वैसी ही अनुभूति होगी। हम सिद्धयोग के गुरुओं के साथ तीर्थयात्रा पर जाएँगे।

आप इस वीडिओ में जो छवियाँ देखेंगे, उनमें से एक छवि के बारे में एक प्यारा-सा प्रसंग मैं आपके साथ साझा करना चाहती हूँ। कुछ दिन पूर्व गुरुमाई जी ने इस वीडिओ के लिए एक श्वेत शंख का चित्र चुना क्योंकि भगवान श्रीविष्णु को अकसर शंख बजाते हुए या एक हाथ में शंख धारण किए हुए दर्शाया जाता है। शंख का चित्र चुनने के कुछ ही क्षणों बाद, बड़े बाबा के मन्दिर के पास से होकर गुज़रते हुए, उन्होंने ऊपर आकाश की ओर देखा। गुरुमाई जी ने बताया है कि जब वे *विशेष तौर पर* मन्दिर के ऊपर के आकाश को देखती हैं, तब उन्हें उसी आकार के बादल दिखते हैं जिसके विषय में वे बात कर रही होती हैं या सिखा रही होती हैं। आश्चर्य! *उसी* दिन आकाश में एक बड़ा-सा सफ़ेद बादल था जिसका आकार बिलकुल भगवान श्रीविष्णु के शंख जैसा था!

संयोग और विस्मय के ऐसे क्षण इस पूरे वीडिओ में गुँथे हुए हैं। मुझे लगता है कि जब आप इस वीडिओ को देखेंगे तो आप पाएँगे कि आप मात्र किसी बाहरी स्थान की तीर्थयात्रा पर नहीं जा रहे हैं। एक आन्तरिक तीर्थयात्रा है जो हो रही है, आपके अन्तर के उस क्षेत्र की तीर्थयात्रा जहाँ कृतज्ञता का वास है।

हाल ही में थैन्क्स्गिविंग के सन्दर्भ में गुरुमाई जी ने कहा, "हरेक के हृदय की गहराई में बहुत कृतज्ञता है। लोग अपनी कृतज्ञता हमेशा अभिव्यक्त नहीं कर पाते, इसलिए चाहे उनकी कोई भी परम्परा या संस्कृति हो, चाहे वे भगवान में आस्था रखते हों या नहीं, यह सभी के लिए एक महान अवसर है कि वे खुलकर अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करें।"

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।